नाम :- डॉ. सुजाता गुप्ता
विभाग - हिंदी
वर्ग - इंटरमीडिएट XII
शीर्षक - जन-जन का चेहरा
कवि - मुक्तिबोध

जन-जन का चेहरा

प्रस्तुत कविता में हर पाठक अपने समयबोध का आभास करता है। 'जलता भयानक सितारा' अपनी सांकेतिकता में उत्पीड़न, निरंकुशता का प्रतीक बन गया है। अपनी भयावहता में वह जन-जन के कष्टों की ओर इशारा करता है। यह दानवी प्रवृत्ति उसे निरंतर भयभीत कर रही है। उसी प्रकार नदियों का बहाव, जीवन में निरंतर बहती वेदना को प्रतिबिंबित करता है। ये सभी मानव के संघर्षमय जीवन की साक्षी, बन अपने प्रवाह में कल-कल करती हुई, मानवीय वेदना के गीत गाती हैं। शासकों ने अपनी सेनाओं का प्रसारकर अपनी-अपनी जनता को परेशान कर रखा है। अर्थात् विश्व का कोई भी देश हो वहाँ शोषक और शोषितों का चेहरा एक-सा ही है। जनता का शोषक, उनका शत्रु भी एक प्रकार का है। पूरा विश्व इस प्रकार के प्रताड़ना को झेलने को बेबस है।

जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से समूचे संसार के अंधकार को समाप्त कर देता है, और पूरी दुनिया में एकसमान उजाले

का संचार करता है। उसकी आशामयी किरणों से, एक विराट प्रकाश निकलता है, वह पूरी दुनिया का मित्र एक ही होता है। उसी प्रकार से वह क्रांति की एक समान ज्वाला होती है। विश्व के सभी वनस्पतियों में सत्य का ज्वाला, उजाला एक ही है। असंख्य मेहनती जनता के अनवरत संघर्षों से थकती पैरों की मोच, उसके सृजन से उठी वेदना भी समान है। वह एक हिम्मत का दम भरता इंसान भले ही भिन्न कस्बे और प्रांतों का हो, मगर उसका चेहरा एक ही नजर आता है।

भौतिक स्थिति भले ही भिन्न-भिन्न हो, मगर पूरा विश्व के देश ऐतिहासिक बंधनों में आपस में जुड़े हैं। मगर हिन्दुस्तान अपनी गौरवशाली परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहरों के कारण अपनी अमिट छाप छोड़ चुका है। अपनी बहुरंगी परंपराओं के कारण भारतवर्ष सदैव सराहनीय रहा है। भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना, मानवता, करुणा और अहिंसा आदि संस्कारों का विश्वगुरु रहा है। अतः पूरा विश्व और इसके निवासी भारत की ओर आशापूर्ण नेत्रों से देख रहे हैं। भारतीय मूल्यों के प्रति उनकी आस्था एक आशापूर्ण वातावरण का निर्माण करते हैं।

दानव-दुरात्मा, यह दोनों ही रूप समाज के लिए अहितकर है। जिस प्रकार दानव अपने रूप स्वं व्यवहार से जन को भयभीत एवं प्रताड़ित करता है, उसी प्रकार एक मलिन सोच और अमानवीय कृत्यों का दुराचारी प्रवृत्ति वाला दुरात्मा कहलाता है। समाज की प्रत्येक व्यवस्था में ऐसे दुष्टों की प्रवृत्ति एक समान होती है। दानव, पाशविक प्रवृत्ति का और दुराचारी, दुष्ट प्रकृति का होता है। ये दोनों एक समान रूप से समाज के लिए हानिकारक हैं और सर्वत्र पाए भी जाते हैं।

— P.T.O —